उपयोग प्ररूपणा

Presentation Developed By :
Smt Sarika Vikas Chhabra

वत्थुणिमित्तं भावो, जादो जीवस्स जो दु उवजोगो।
सो दुविहो णायव्वो, सायारो चेव णायारो॥672॥

- अर्थ - जीव का जो भाव वस्तु को (ज्ञेय को) ग्रहण करने के लिये प्रवृत्त होता है उसको उपयोग कहते हैं।
- इसके दो भेद हैं - एक साकार (सविकल्प), दूसरा निराकार (निर्विकल्प) ॥672॥

उपयोग

वस्तु के ग्रहण करने के लिए

जो जीव का परिणाम विशेष प्रवर्ते

उसे उपयोग कहते हैं ।

यह जीव का निर्दोष लक्षण है ।

उपयोग

- साकार
  - ज्ञानोपयोग
- अनाकार
  - दर्शनोपयोग

वस्तु

एकीभाव से गुण, पर्याय जिसमें बसते हैं, उसे वस्तु कहते हैं ।

णाणं पंचविहं पि य, अण्णाणतियं च सागरुवजोगो।
चदुदंसणमणगारो, सव्वे तल्लक्खणा जीवा॥673॥

- अर्थ - पाँच प्रकार का सम्यग्ज्ञान - मति, श्रुत, अवधि, मन:पर्यय तथा केवल और तीन प्रकार का अज्ञान (मिथ्यात्व) - कुमति, कुश्रुत, विभंग ये आठ साकार उपयोग के भेद हैं।
- चार प्रकार का दर्शन - चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन और केवलदर्शन अनाकार उपयोग है।
- यह ज्ञान-दर्शनरूप उपयोग ही संपूर्ण जीवों का लक्षण है ॥673॥

साकार उपयोग

5 सम्यग्ज्ञान

- मति
- श्रुत
- अवधि
- मनः पर्यय
- केवल

3 अज्ञान

- कुमति
- कुश्रुत
- विभंग

अनाकार उपयोग

- चक्षु
- अचक्षु
- अवधि
- केवल

मदिसुदओहिमणेहि य, सगसगविसये विसेसविण्णाणं।
अंतोमुहुत्तकालो, उवजोगो सो दु सायारो॥674॥

- अर्थ - मति, श्रुत, अवधि और मन:पर्यय इनके द्वारा अपने-अपने विषय का अन्तर्मुहूर्त काल पर्यन्त जो विशेष ज्ञान होता है उसको ही साकार उपयोग कहते हैं ॥674॥

साकार उपयोग

केवलज्ञान को छोड़कर शेष ज्ञानों के द्वारा

अपने-अपने विषयों का विशेष ज्ञानरूप जो उपयोग है,

वह साकार उपयोग है ।

एक जीव को यह अधिकतम अंतर्मुहूर्त तक होता है ।

केवलज्ञान तो क्षायिक होने से निरंतर (सादि-अनंत काल तक) चलता है ।

इंदियमणोहिणा वा, अत्थे अविसेसिदूण जं गहणं।
अंतोमुहुत्तकालो, उवजोगो सो अणायारो॥675॥

- अर्थ - इन्द्रिय, मन और अवधि के द्वारा अन्तर्मुहूर्त काल तक पदार्थों का जो सामान्यरूप से ग्रहण होता है उसको निराकार उपयोग कहते हैं ॥675॥

निराकार उपयोग

इन्द्रियों, मन अथवा अवधिदर्शन के द्वारा

जीवादि पदार्थों का विशेष भेद न करके

सामान्यपने जो ग्रहण करता है,

वह निराकार उपयोग है ।

एक जीव को यह अधिकतम अंतर्मुहूर्त तक होता है ।

केवलदर्शन तो क्षायिक होने से निरंतर सादि-अनंत काल तक चलता है ।

छद्मस्थ के ज्ञानोपयोग एवं दर्शनोपयोग क्रमशः होते हैं ।

केवलज्ञानी के दोनों युगपत् होते हैं ।

昵图网 nipic.com/zdl98821

णाणुवजोगजुदाणं, परिमाणं णाणमग्गणं व हवे।
दंसणुवजोगियाणं, दंसणमग्गण व उत्तकमो॥676॥

- अर्थ - ज्ञानोपयोग वाले जीवों का प्रमाण ज्ञानमार्गणावाले जीवों की तरह समझना चाहिये और दर्शनोपयोगवालों का प्रमाण दर्शनमार्गणावालों की तरह समझना चाहिये। इनमें कुछ विशेषता नहीं है ॥676॥

उपयोग — संख्या

ज्ञानोपयोगी	• ज्ञान मार्गणा की तरह
दर्शनोपयोगी	• दर्शन मार्गणा की तरह

इन प्रत्येक में संपूर्ण जीव राशि आएगी क्योंकि उपयोग जीव का लक्षण है ।

इस ही प्ररूपणा में सारे भेद एक साथ एक ही जीव में पाए जा रहे हैं ।

केवलज्ञान

केवलदर्शन

- Reference : गोम्मटसार जीवकाण्ड, सम्यग्ज्ञान चंद्रिका, गोम्मटसार जीवकांड - रेखाचित्र एवं तालिकाओं में

Presentation developed by

Smt. Sarika Vikas Chhabra

- For updates / feedback / suggestions, please contact
  - Sarika Jain, sarikam.j@gmail.com
  - www.jainkosh.org
  - ☎: 94066-82889